कुमार गंधर्व

जन्म	:	8 अप्रैल 1924 ।
निधन	:	/1992 ।
जन्म-स्थान	:	ग्राम-सुलेभावी, जिला-बेलगाँव, कर्नाटक ।
मूलनाम	:	शिवपुत्र कोमकली ।
पिता	:	सिद्धरमैय्या कोमकली (गायक और कोमकली मठ के प्रधान) ।
निवास स्थान	:	देवास, मध्य प्रदेश ।
संगीत गुरु	:	प्रो० बी० आर० देवधर (महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संगीताचार्य) तथा अंजनीबाई मालवेकर (प्रसिद्ध गायिका एवं संगीत गुरु)
प्रमुख कृतियाँ	:	'अनूप राग विलास' एवं अनेक लेख, निबंध और टिप्पणियाँ पत्र-पत्रिकाओं में बिखरी, अनेक रचनाएँ अप्रकाशित । अनेक म्यूजिक कंपनियों द्वारा उनके गान के रिकॉर्ड तथा कैसेट जारी ।
सम्मान	:	भारत सरकार की 'संगीत नाटक अकादमी' के सदस्य, भारत भवन, भोपाल के स्थाई सदस्य, कालिदास सम्मान, राष्ट्रपति द्वारा 'पद्मभूषण', विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा डी० लिट्० की उपाधि । अनेक पुरस्कार, सम्मान एवं अलंकरण प्राप्त ।

कुमार गंधर्व 20वीं शती के उत्तरार्ध में हिंदुस्तानी शैली के भारतीय शास्त्रीय संगीत के महान गायक एवं संगीत मनीषी थे । बचपन में ही अपने पिता और परिवेश से प्राप्त नैसर्गिक गायन संस्कारों के बल पर उन्होंने अपनी गायन प्रतिभा से संगीत पारखियों को विस्मित कर दिया था । श्री गुरुकुल स्वामी ने उन्हें देव गायक गंधर्व का अवतार बताया और उसके बाद उनकी प्रसिद्धि कुमार गंधर्व के नए नाम से हो गई । मूल नाम उसकी ओट में हमेशा के लिए छिप गया । कुमार गंधर्व ने 11 वर्षों तक महाराष्ट्र के संगीताचार्य प्रो० बी० आर० देवधर से शास्त्रीय संगीत की अंतर्दृष्टि पाई । कुमार जी ने अंजनीबाई मालवेकर द्वारा भी संगीत शिक्षा पाई । 1947 से 52 के बीच के पाँच वर्षों तक वे बुरी तरह अस्वस्थ हुए और बिस्तर से जा लगे । स्वास्थ्य संबंधी कारणों से ही सपरिवार मध्य प्रदेश के देवास नामक स्थान पर निवास करते हुए औपचारिक रूप से बीमारी की हालत में वे संगीत सभाओं से जरूर कट गए थे, किंतु संगीत संबंधी उनकी अन्वेषण प्रतिभा और कल्पना रुग्णावस्था में भी निरंतर सक्रिय रही । उन्होंने मालवा लोकगीतों का निरीक्षण-परीक्षण जारी रखा । लोकसंगीत के प्रति गहन आकर्षण ने अंततः बीमारी से उबरने में भी उनकी मदद की और संगीत की दुनिया में उनका जैसे पुनर्जन्म हुआ ।

कुमार गंधर्व संगीत और गायकी की दुनिया में विवादास्पद भी रहे । संगीत क्षेत्र की परंपरागत शक्तियों

ने उन्हें एक परंपराभंजक विद्रोही के रूप में देखा । वास्तव में वे एक स्वच्छंद गायक थे और शास्त्रीय संगीत में नए-नए साहसपूर्ण प्रयोग कर रहे थे । वे यद्यपि औपचारिक रूप से ग्वालियर घराने से जुड़े हुए थे, किंतु गायकी को संगीत घरानों में ही सीमित रखने के पक्ष में नहीं थे । वे संगीत में नैसर्गिक रूप से सार्वभौम विशेषताओं और मूल्यों के पक्षधर थे । गायकी की उनकी निजी विशिष्ट शैली थी जिसमें शास्त्रीय और लोकशैली का प्रगल्भ मिश्रण था । लोकसंगीत से ही शास्त्रीय संगीत विकसित हुआ है, यह मान्यता उनमें बहुत गहरी थी । इसे उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव भी किया था । वे मानते थे कि लोकसंगीत के नैसर्गिक स्रोत से जुड़े रहकर शास्त्रीय संगीत सर्वदा नया और स्फूर्तिमय बना रह सकता है, वह कभी रूढ़ नहीं हो सकता । लोकसंगीत के आधार पर उन्होंने नए-नए रागों की खोज और रचना भी की । इस दृष्टि से उनके द्वारा निर्मित राग 'अहिमोहिनी', 'मालवती', 'निंदियारी', 'लग्नगंधार', 'भावमत भैरव', 'सहेली तोड़ी' आदि उल्लेखनीय हैं ।

कुमार गंधर्व की गायकी वास्तव में लंबे रियाज की उपज से कहीं ज्यादा उनकी निजी स्वर-समाधि की उपज थी ।

यहाँ प्रस्तुत पाठ एक महान गायक द्वारा, जो उतना ही बड़ा संगीत मनीषी भी हो, हमारे समय की एक दूसरी महान और अद्वितीय गायिका पर लिखा गया होने के कारण बहुत महत्त्वपूर्ण है । स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर सुगम संगीत के क्षेत्र में सामयिक भारत की विलक्षण प्रतिभा हैं । यह पाठ यहाँ एन० सी० ई० आर० टी० की कक्षा 11 की पुस्तक 'वितान' से साभार संकलित है ।

◆ ◆ ◆

> "हम दक्षिण से लौटे थे । देवास में रुके उज्जैन जाते हुए । अपने घर के बाहरी बरामदे में झूले पर थे वे । हमारे अलावा मुकुल शिवपुत्र भी । हमने कहा : लगता है दक्षिण में साधारण रसिकों को भी व्याकरण का बड़ा ज्ञान है । टप्प से मुकुल ने कहा : यही तो रोना है, व्याकरण है पर कला नहीं। अपने हाथ का गिलास रखते हुए वे बोले : राजा, बिना छंद के फूल नहीं खिलता है ।"
>
> (कुमार गंधर्व : कुछ गद्य कविताएँ)
>
> –अशोक वाजपेयी

बेजोड़ गायिका : लता मंगेशकर

बरसों पहले की बात है । मैं बीमार था । उस बीमारी में एक दिन मैंने सहज ही रेडियो लगाया और अचानक एक अद्वितीय स्वर मेरे कानों में पड़ा । स्वर सुनते ही मैंने अनुभव किया कि यह स्वर कुछ विशेष है, रोज का नहीं । यह स्वर सीधे मेरे कलेजे से जा भिड़ा । मैं तो हैरान हो गया । मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि यह स्वर किसका है । मैं तन्मयता से सुनता ही रहा । गाना समाप्त होते ही गायिका का नाम घोषित किया गया–लता मंगेशकर । नाम सुनते ही मैं चकित हो गया । मन-ही-मन एक संगति पाने का भी अनुभव हुआ । सुप्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी एक दूसरा स्वरूप लिए उन्हीं की बेटी की कोमल आवाज में सुनने का अनुभव हुआ ।

मुझे लगता है 'बरसात' के पहले के किसी चित्रपट का वह कोई गाना था । तब से लता निरंतर गाती चली आ रही है और मैं भी उसका गाना सुनता आ रहा हूँ । लता के पहले सुप्रसिद्ध गायिका नूरजहाँ का चित्रपट संगीत में अपना जमाना था । परंतु उसी क्षेत्र में बाद में आई हुई लता उससे कहीं आगे निकल गई । कला के क्षेत्र में ऐसे चमत्कार कभी-कभी दीख पड़ते हैं । जैसे प्रसिद्ध सितारिए विलायत खाँ अपने सितारवादक पिता की तुलना में बहुत ही आगे चले गए । मेरा स्पष्ट मत है कि भारतीय गायिकाओं में लता के जोड़ की गायिका हुई ही नहीं । लता के कारण चित्रपट संगीत को विलक्षण लोकप्रियता प्राप्त हुई है, यही नहीं लोगों का शास्त्रीय संगीत की ओर देखने का दृष्टिकोण भी एकदम बदला है । छोटी बात कहूँगा । पहले भी घर-घर बच्चे गाया करते थे पर उस गाने में और आजकल घरों में सुनाई देने वाले बच्चों के गाने में बड़ा अंतर हो गया है । आजकल के नन्हे-मुन्ने भी स्वर में गुनगुनाते हैं । क्या लता इस जादू का कारण नहीं है ? कोकिला का स्वर निरंतर कानों में पड़ने लगे तो कोई भी सुनने वाला उसका अनुकरण करने का प्रयत्न करेगा । यह स्वाभाविक ही है । चित्रपट संगीत के कारण सुंदर स्वर मालिकाएँ' लोगों के कानों पर पड़ रही हैं । संगीत के विविध प्रकारों से उनका परिचय हो रहा है । उनका स्वर ज्ञान बढ़ रहा है । सुरीलापन क्या है, इसकी समझ भी उन्हें होती जा रही है । तरह-तरह की लय

के भी प्रकार उन्हें सुनाई पड़ने लगे हैं और आकारयुक्त लय के साथ उनकी जान-पहचान होती जा रही है। साधारण प्रकार के लोगों को भी उसकी सूक्ष्मता समझ में आने लगी है। इन सबका श्रेय लता को ही है। इस प्रकार उसने नई पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया है और सामान्य मनुष्य में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में बड़ा हाथ बँटाया है। संगीत की लोकप्रियता, उसका प्रसार और अभिरुचि के विकास का श्रेय लता को ही देना पड़ेगा।

सामान्य श्रोता को अगर आज लता की **ध्वनिमुद्रिका**[2] और **शास्त्रीय गायकी**[3] की ध्वनिमुद्रिका सुनाई जाए तो वह लता की ध्वनिमुद्रिका ही पसंद करेगा। गाना कौन-से राग में गाया गया और ताल कौन-सा था, यह शास्त्रीय ब्यौरा इस आदमी को सहसा मालूम नहीं रहता। उसे इससे कोई मतलब नहीं कि राग **मालकोस**[4] था और ताल **त्रिताल**[5]। उसे तो चाहिए वह मिठास, जो उसे मस्त कर दे, जिसका वह अनुभव कर सके और यह स्वाभाविक ही है। क्योंकि जिस प्रकार मनुष्यता हो तो वह मनुष्य है, वैसे ही **'गानपन'**[6] हो तो वह संगीत है। और लता का कोई भी गाना लीजिए तो उसमें शत-प्रतिशत यह 'गानपन' मौजूद मिलेगा।

लता की लोकप्रियता का मुख्य मर्म यह 'गानपन' ही है। लता के गाने की एक और विशेषता है, उसके स्वरों की निर्मलता। उसके पहले की पार्श्व गायिका नूरजहाँ भी एक अच्छी गायिका थी, इसमें संदेह नहीं तथापि उसके गाने में एक मादक उत्तान दीखता था। लता के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है। ऐसा दीखता है कि लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है वही उसके गायन की निर्मलता में झलक रहा है। हाँ, संगीत दिग्दर्शकों ने उसके स्वर की इस निर्मलता का जितना उपयोग कर लेना चाहिए था, उतना नहीं किया। मैं स्वयं संगीत दिग्दर्शक होता तो लता को बहुत जटिल काम देता, ऐसा कहे बिना रहा नहीं जाता।

लता के गाने की एक और विशेषता है, उसका नादमय उच्चार। उसके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा बड़ी सुंदर रीति से भरा रहता है और ऐसा प्रतीत होता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं। यह बात पैदा करना बड़ा कठिन है, परंतु लता के साथ यह बात अत्यंत सहज और स्वाभाविक हो बैठी है।

ऐसा माना जाता है कि लता के गाने में करुण रस विशेष प्रभावशाली रीति से व्यक्त होता है, पर मुझे खुद यह बात नहीं पटती। मेरा अपना मत है कि लता ने करुण रस के साथ उतना न्याय नहीं किया है। बजाए इसके, मुग्ध शृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या **द्रुतलय**[7] के गाने लता ने बड़ी उत्कटता से गाए हैं। मेरी दृष्टि से उसके गायन में एक और कमी है; तथापि यह कहना कठिन होगा कि इसमें लता का दोष कितना है और संगीत दिग्दर्शकों का दोष कितना। लता का गाना सामान्यतः **ऊँची पट्टी**[8] में रहता है। गाने में संगीत दिग्दर्शक उसे अधिकाधिक ऊँची पट्टी में गवाते हैं और उसे अकारण ही चिलवाते हैं।

एक प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि शास्त्रीय संगीत में लता का स्थान कौन-सा है। मेरे मत से यह प्रश्न खुद ही प्रयोजनहीन है। उसका कारण यह है कि शास्त्रीय संगीत और चित्रपट

संगीत में तुलना हो ही नहीं सकती । जहाँ गंभीरता शास्त्रीय संगीत का स्थाई भाव है वहीं **जलदलय**[9] और चपलता चित्रपट संगीत का मुख्य गुणधर्म है । चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है, जबकि शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है । चित्रपट संगीत में आधे तालों का उपयोग किया जाता है । उसकी लयकारी बिलकुल अलग होती है, आसान होती है । यहाँ गीत और आघात को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है। **सुलभता और लोच**[10] को अग्र स्थान दिया जाता है; तथापि चित्रपट संगीत गाने वाले को शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है और वह लता के पास नि:संशय है । तीन-साढ़े तीन मिनट के गाए हुए चित्रपट के किसी गाने का और एकाध खानदानी शास्त्रीय गायक की तीन-साढ़े तीन घंटे की महफिल, इन दोनों का कलात्मक और आनंदात्मक मूल्य एक ही है, ऐसा मैं मानता हूँ । किसी उत्तम लेखक का कोई विस्तृत लेख जीवन के रहस्य का विशद रूप में वर्णन करता है तो वही रहस्य छोटे-से सुभाषित का या नन्ही-सी कहावत में सुंदरता और परिपूर्णता से प्रकट हुआ भी दृष्टिगोचर होता है। उसी प्रकार तीन घंटों की रंगदार महफिल का सारा रस लता की तीन मिनट की ध्वनिमुद्रिका में आस्वादित किया जा सकता है । उसका एक-एक गाना एक संपूर्ण कलाकृति होता है । स्वर, लय, शब्दार्थ का वहाँ त्रिवेणी संगम होता है और महफिल की बेहोशी उसमें समाई रहती है । वैसे देखा जाए तो शास्त्रीय संगीत क्या और चित्रपट संगीत क्या, अंत में रसिक को आनंद देने की सामर्थ्य किस गाने में कितनी है, इस पर उसका महत्त्व ठहराना उचित है । मैं तो कहूँगा कि शास्त्रीय संगीत भी रंजक न हो, तो बिलकुल ही नीरस ठहरेगा । अनाकर्षक प्रतीत होगा और उसमें कुछ कमी-सी प्रतीत होगी । गाने में जो गानपन प्राप्त होता है, वह केवल शास्त्रीय बैठक के पक्केपन की वजह से, ताल-सुर के निर्दोष ज्ञान के कारण नहीं । गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर मुख्यत: अवलंबित रहती है और रंजकता का मर्म रसिक वर्ग के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाए, किस रीति से उसकी बैठक बिठाई जाए और श्रोताओं से कैसे सुसंवाद साधा जाए, इसमें समाविष्ट है । किसी मनुष्य का अस्थिपंजर और एक प्रतिभाशाली कलाकार द्वारा उसी मनुष्य का **तैलचित्र**[11], इन दोनों में जो अंतर होगा वही गायन के शास्त्रीय ज्ञान और उसकी स्वरों द्वारा की गई सुसंगत अभिव्यक्ति में होगा ।

संगीत के क्षेत्र में लता का स्थान अव्वल दर्जे के खानदानी गायक के समान ही मानना पड़ेगा । क्या लता तीन घंटों की महफिल जमा सकती है, ऐसा संशय व्यक्त करने वालों से मुझे भी एक प्रश्न पूछना है, क्या कोई पहली श्रेणी का गायक तीन मिनट की अवधि में चित्रपट का कोई गाना उसकी इतनी कुशलता और रसोत्कटता से गा सकेगा ? नहीं, यही उस प्रश्न का उत्तर उन्हें देना पड़ेगा । खानदानी गवैयों का ऐसा भी दावा है कि चित्रपट संगीत के कारण लोगों की अभिरुचि बिगड़ गई है । चित्रपट संगीत ने लोगों के 'कान बिगाड़ दिए' ऐसा आरोप लगाया जाता है । पर मैं समझता हूँ कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान खराब नहीं किए हैं, उलटे सुधार दिए हैं । ये विचार पहले ही व्यक्त किए हैं और उनकी पुनरुक्ति नहीं करूँगा ।

सच बात तो यह है कि हमारे शास्त्रीय गायक बड़ी आत्मसंतुष्ट वृत्ति के हैं । संगीत के क्षेत्र में उन्होंने अपनी हुकुमशाही स्थापित कर रखी है । शास्त्र-शुद्धता के कर्मकांड को उन्होंने आवश्यकता से अधिक महत्त्व दे रखा है । मगर चित्रपट संगीत द्वारा लोगों की अभिजात संगीत से जान-पहचान होने लगी है । उनकी चिकित्सक और चौकस वृत्ति अब बढ़ती जा रही है । केवल शास्त्र-शुद्ध और नीरस गाना उन्हें नहीं चाहिए, उन्हें तो सुरीला और भावपूर्ण गाना चाहिए । और यह क्रांति चित्रपट संगीत ही लाया है । चित्रपट संगीत समाज की संगीत विषयक अभिरुचि में प्रभावशाली मोड़ लाया है । चित्रपट संगीत की लचकदारी उसकी एक और सामर्थ्य है, ऐसा मुझे लगता है । उस संगीत की मान्यताएँ, मर्यादाएँ, झंझटें सब कुछ निराली हैं । चित्रपट संगीत का तंत्र ही अलग है । यहाँ नवनिर्मिति की बहुत गुंजाइश है । जैसा शास्त्रीय रागदारी का चित्रपट संगीत दिग्दर्शकों ने उपयोग किया, उसी प्रकार राजस्थानी, पंजाबी, बंगाली प्रदेश के लोकगीतों के भंडार को भी उन्होंने खूब लूटा है, यह हमारे ध्यान में रहना चाहिए । धूप का कौतुक करने वाले पंजाबी लोकगीत, रुक्ष और निर्जल राजस्थान में **पर्जन्य**[12] की याद दिलाने वाले गीत, पहाड़ों की घाटियों, खोरों में प्रतिध्वनित होने वाले पहाड़ी गीत, ऋतुचक्र समझाने वाले और खेती के विविध कामों का हिसाब लेने वाले कृषि गीत और ब्रजभूमि में समाविष्ट सहज मधुर गीतों का अतिशय मार्मिक व रसानुकूल उपयोग चित्रपट क्षेत्र के प्रभावी संगीत दिग्दर्शकों ने किया है और आगे भी करते रहेंगे। थोड़े में कहूँ तो संगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण है । वहाँ अब तक अलक्षित, असंशोधित और अदृष्टपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्रांत है तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं । फलस्वरूप चित्रपट संगीत दिनोंदिन अधिकाधिक विकसित होता जा रहा है ।

ऐसे इस चित्रपट संगीत क्षेत्र की लता अनभिषिक्त साम्राज्ञी है । और भी कई पार्श्व गायक-गायिकाएँ हैं, पर लता की लोकप्रियता इन सभी से कहीं अधिक है । उसकी लोकप्रियता के शिखर का स्थान अचल है। बीते अनेक वर्षों से वह गाती आ रही है, फिर भी उसकी लोकप्रियता अबाधित है । लगभग आधी शताब्दी तक जन-मन पर सतत प्रभुत्व रखना आसान नहीं है । ज्यादा क्या कहूँ, एक राग भी हमेशा टिका नहीं रहता । भारत के कोने-कोने में लता का गाना जा पहुँचे, यही नहीं परदेश में भी उसका गाना सुनकर लोग पागल हो उठें, यह क्या चमत्कार नहीं है ? और यह चमत्कार हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं ।

ऐसा कलाकार शताब्दियों में शायद एक ही पैदा होता है । ऐसा कलाकार आज हम सभी के बीच है, उसे अपनी आँखों के सामने घूमता-फिरता देख पा रहे हैं । कितना बड़ा है हमारा भाग्य !

❑❑❑

अभ्यास

पाठ के साथ

1. लता मंगेशकर की आवाज सुनकर लेखक पर क्या प्रभाव पड़ा ?
2. 'लता मंगेशकर ने नई पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया है । संगीत की लोकप्रियता, उसका प्रसार और अभिरुचि के विकास का श्रेय लता को ही देना पड़ेगा ।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं ? यदि हाँ, तो अपना पक्ष प्रस्तुत करें ।
3. शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत में क्या अंतर है ? आप दोनों में किसे बेहतर मानते हैं, और क्यों ? उत्तर दें ।
4. कुमार गंधर्व ने लता मंगेशकर के गायन की कौन-कौन-सी विशेषताएँ बताई हैं ? साथ ही उन्होंने लता मंगेशकर के गायन के किन दोषों की चर्चा की है ?
5. 'चित्रपट संगीत ने लोगों के कान बिगाड़े नहीं सुधारे हैं ।' इस संबंध में आपके क्या विचार हैं ?
6. चित्रपट संगीत की प्रसिद्धि के क्या कारण हैं ? इसके विकास को आप सही मानते हैं ? यदि हाँ, तो कैसे ?
7. निम्नलिखित वाक्यों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –
   (क) कोकिला का स्वर निरंतर कानों में पड़ने लगे तो कोई भी सुनने वाला उसका अनुकरण करने का प्रयत्न करेगा । यह स्वाभाविक ही है ।
   (ख) और लता का कोई भी गाना लीजिए तो उसमें शत-प्रतिशत यह 'गानपन' मौजूद मिलेगा ।
   (ग) चित्रपट संगीत समाज की संगीत विषयक अभिरुचि में प्रभावशाली मोड़ लाया है ।
8. ऊँची पट्टी में गायन से आप क्या समझते हैं ?
9. लता मंगेशकर भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ हैं । लेखक के इस कथन पर आप अपना विचार प्रस्तुत करें ।
10. गानपन से क्या आशय है ? इसे किस तरह अभ्यास से पाया जा सकता है ?
11. 'संगीत का क्षेत्र ही विस्तीर्ण है । वहाँ अब तक अलक्षित, असंशोधित और अदृष्टपूर्व ऐसा खूब बड़ा प्रांत है तथापि बड़े जोश से इसकी खोज और उपयोग चित्रपट के लोग करते चले आ रहे हैं' – इस कथन को वर्तमान फिल्मी संगीत के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए ।
12. घर-घर में गाने वाले पहले के बच्चों और आज के बच्चों के गान में कुमार गंधर्व अंतर देखते हैं । यह अंतर क्या है ?

पाठ के आस-पास

1. आप अपनी पसंद से लता मंगेशकर के दस गीतों का चुनाव करें और उनकी सूची बनाएँ ।
2. करुण और शृंगार रस क्या हैं ? इनके स्थाई भाव क्या हैं ?
3. लता मंगेशकर का परिवार संगीत से पूरी तरह से जुड़ा हुआ है । उनके परिवार के अन्य सदस्यों के

बारे में जानकारी प्राप्त करें ।

4. लता मंगेशकर के अतिरिक्त हिंदी सिनेमा की पाँच प्रमुख गायिकाओं के नाम बताएँ ।
5. लता मंगेशकर ने ऊँची पट्टी में कौन-कौन से गीत गाएँ हैं । अपने मित्रों एवं शिक्षक से इस विषय पर चर्चा करें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के समास पहचानें –
   नन्हे-मुन्ने, सितारवादक, त्रिवेणी, अनाकर्षक, लोकप्रिय, शताब्दी, घर-घर
2. निम्नलिखित शब्दों में कौन-से उपसर्ग हैं –
   अद्वितीय, सुप्रसिद्ध, अभिरुचि, संपूर्ण, सुसंगत, नवनिर्मित, प्रतिध्वनि, अलक्षित
3. अर्थ की दृष्टि से निम्नलिखित वाक्यों की प्रकृति बताएँ –
   (क) मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि यह स्वर किसका है ।
   (ख) मेरा स्पष्ट मत है कि भारतीय गायिकाओं में लता के जोड़ की गायिका हुई ही नहीं ।
   (ग) इन सब का श्रेय लता को ही है ।
   (घ) ऐसा प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि शास्त्रीय संगीत में लता का स्थान कौन-सा है ?
   (ङ.) कितना बड़ा हमारा भाग्य !
4. निम्नलिखित शब्दों से संज्ञा और विशेषण छाँटें –
   रेडियो, स्वर, कोमल, आवाज, प्रसिद्ध, मिठास, मनुष्य, मनुष्यता, संगीत, त्रिवेणी, राजस्थान, पागल

शब्द निधि :

अद्वितीय : अनुपम
चित्रपट : सिनेमा
विलक्षण : अद्‌भुत, अपूर्व
हुकुमशाही : एकाधिकार
अभिजात संगीत : शास्त्रीय संगीत
चौकसवृत्ति : सावधानी
अनभिषिक्त : जिसका अभिषेक अभी नहीं हुआ हो, बेताज
अलक्षित : जिसे देखा-परखा न गया हो
तन्मयता : लीन होने का भाव
सितारिए : सितार बजाने वाले
कोकिला : कोयल जैसे मीठे स्वर वाली
अभिरुचि : पसंद
दिग्दर्शक : दिशा दिखाने वाला, डायरेक्टर
रंजक : प्रसन्न करने वाला
अवलंबित : आश्रित

सुसंगत : संगतिपूर्ण, मेल का
अव्वल दर्जे का : ऊँचे या प्रथम स्तर का
रसोत्कटता : रस की प्रधानता, तीव्र रसमयता
कौतुक : कुतूहल
निर्जल : बिना जल के, रूखा
असंशोधित : बिना संशोधन के
अदृष्टपूर्व : जो पहले नहीं देखा गया हो
शताब्दी : सौ वर्ष

पाठ में आए पारिभाषिक शब्द :

1. स्वरों के क्रमबद्ध समूह । स्वर मालिका बोल (शब्द) नहीं होते ।
2. स्वर लिपि
3. जिसमें गायन को कुछ निर्धारित नियमों के अंदर ही गाया जाता है । खयाल, ध्रुपद, धमार आदि शास्त्रीय गायकी के अंतर्गत आते हैं ।
4. भैरवि थाट का राग, जिसमें रे और प वर्जित हैं । इसमें सारे स्वर कोमल लगते हैं । यह गंभीर प्रकृति का लोकप्रिय राग है ।
5. यह सोलह मात्राओं का ताल है । इसमें चार-चार मात्राओं के चार विभाग होते हैं ।
6. गाने का ऐसा अंदाज जो एक आम आदमी को भी भावविभोर कर दे ।
7. लय तीन प्रकार की होती है- (क) विलंबितलय (धीमी) (ख) मध्यलय (बीच की) (ग) द्रुतलय (तेज) मध्यलय से दुगुनी और विलंबितलय से चौगुनी तेज लय द्रुतलय कहलाती है ।
8. ऊँचे (तारसप्तक के) स्वरों का प्रयोग
9. द्रुतलय (तेज)
10. स्वरों का बारीक मनोरंजक प्रयोग
11. जिस चित्र में तैलीय रंगों का प्रयोग किया जाता है ।
12. वर्षावाले बादल